एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 02 (फरवरी, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

पशुपालन क्षेत्र में महिलाओं की केंद्रीय भूमिका: कृषि विस्तार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक सशक्त आधार

*साक्षी चतुर्वेदी[1] एवं सौरभ शुक्ल[2]
[1]यंग प्रोफेशनल 2, भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान, झाँसी (उ.प्र.), भारत
[2]पीएचडी रिसर्च स्कॉलर, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी (उ.प्र.), भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sakshichaturvedi1504@gmail.com

भारत में पशुपालन क्षेत्र सतत ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनकर उभरा है। यह क्षेत्र न केवल कृषि आय का पूरक है, बल्कि लाखों ग्रामीण परिवारों, विशेषकर महिलाओं, के लिए मुख्य आजीविका स्रोत भी है। आर्थिक दृष्टि से, पशुपालन क्षेत्र का योगदान राष्ट्रीय आय और कृषि सकल घरेलू उत्पाद में लगातार बढ़ रहा है। इसके साथ-साथ, यह तथ्य भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इस क्षेत्र की रीढ़ महिलाएँ हैं, जिनका योगदान अब तक पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं पा सका है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुपालन क्षेत्र का आर्थिक योगदान

पशुपालन क्षेत्र भारत की कृषि अर्थव्यवस्था का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला घटक है।

- वर्ष 2018-19 में पशुपालन क्षेत्र का योगदान
  - ❖ राष्ट्रीय आय में लगभग 5%
  - ❖ कृषि GDP में 28% रहा
- पिछले छह वर्षों में
  - ❖ पशुपालन क्षेत्र की वृद्धि दर 7.9% (स्थिर कीमतों पर) रही
  - ❖ जबकि फसल खेती की वृद्धि मात्र 2% रही

यह आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि भविष्य की कृषि विकास रणनीति में पशुपालन की भूमिका केंद्र में होनी चाहिए।

पशुपालन में महिलाओं की भागीदारी: अदृश्य लेकिन निर्णायक

भारत में पशुपालन क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी असाधारण रूप से अधिक है:

- ग्रामीण क्षेत्रों में 72% महिला श्रमिक कृषि एवं संबंधित गतिविधियों में संलग्न हैं
- राष्ट्रीय पशुधन नीति (NLP), 2013 के अनुसार
  - ❖ पशुपालन क्षेत्र में 70% श्रम महिलाओं से आता है

भारत में:

- कुल 22.45 मिलियन लोग पशुपालन से जुड़े हैं
- इनमें से 16.84 मिलियन महिलाएँ हैं

डेयरी क्षेत्र में तो यह असंतुलन और भी स्पष्ट है:

- 75 मिलियन महिलाएँ दुग्ध उत्पादन में कार्यरत हैं
- जबकि पुरुषों की संख्या मात्र 15 मिलियन है

इसके बावजूद, महिलाएँ निर्णय-निर्माण, संसाधनों और आय नियंत्रण से वंचित रहती हैं।

डेयरी सहकारी समितियाँ और महिला भागीदारी

सहकारी संस्थाएँ महिला सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम रही हैं
वर्ष 2020–21 में

- डेयरी सहकारी समितियों में 5.4 मिलियन महिला सदस्य थीं

- जो कुल सदस्यों का लगभग 31–32% हैं
- 73.54% दुग्ध उत्पादक महिलाएँ हैं
- महिलाएँ डेयरी के 90% दैनिक कार्य (दूध दुहना, चारा देना, देखभाल) करती हैं

हालाँकि, सदस्यता बढ़ने के बावजूद स्वामित्व और नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी सीमित बनी हुई है।

महिलाओं और पशुपालन: कार्यभार बनाम अधिकार

महिलाएँ पशुपालन के अधिकांश कार्यों को संभालती हैं:

- चारा संग्रह 90% कार्य महिलाएँ करती हैं
- छोटे पशुओं (बकरी, मुर्गी आदि) पर महिलाओं का नियंत्रण 60% है।
- पशुपालन कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी 70–80% है।

इसके विपरीत:

- कृषि भूमि स्वामित्व में महिलाओं की हिस्सेदारी मात्र 13.96% है
- आय, ऋण और तकनीकी संसाधनों पर उनका नियंत्रण सीमित है

यह स्थिति पशुपालन की आर्थिक क्षमता को पूरी तरह उपयोग में लाने में बाधा बनती है।

महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs): आर्थिक सशक्तिकरण का माध्यम

महिला-आधारित स्वयं सहायता समूह पशुपालन क्षेत्र में एक लागत-प्रभावी और टिकाऊ मॉडल बनकर उभरे हैं।

- लगभग 30% महिला SHGs पशुपालन गतिविधियों से जुड़ी हैं
- SHGs के माध्यम से:
  - ❖ बचत और ऋण तक पहुँच
  - ❖ सामूहिक विपणन
  - ❖ जोखिम साझा करना
  - ❖ आय में स्थिरता

SHGs ने न केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधारी, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा दिया है।

सफल उदाहरण: महिला-नेतृत्व वाले दुग्ध संगठन

भारत में महिला-केंद्रित डेयरी संगठनों की सफलता उल्लेखनीय रही है:

- 48,000 से अधिक महिला-नेतृत्व वाली सहकारी समितियाँ है।
- 16 पूर्णतः महिला-प्रबंधित MPOs है।
- लगभग 1.2 मिलियन महिला उत्पादक, 35,000 गाँवों में है।

आंध्र प्रदेश की 'श्रीजा' महिला दुग्ध उत्पादक संगठन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर **डेयरी इनोवेशन अवॉर्ड** से सम्मानित किया गया।

महिला-नेतृत्व वाला पशुपालन: कृषि अर्थव्यवस्था में मूल्य वृद्धि और स्थिर आय का स्रोत

अर्थशास्त्रीय दृष्टि से, महिला-प्रधान पशुपालन गतिविधियाँ भारतीय कृषि की **आर्थिक मूल्य वृद्धि** में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। फसल खेती की तुलना में पशुपालन, विशेषकर दुग्ध उत्पादन, **निरंतर नकद आय** प्रदान करता है, जिससे ग्रामीण परिवारों की आय स्थिर होती है और कृषि जोखिमों का प्रभाव कम होता है। अध्ययनों से स्पष्ट है कि महिलाएँ पशुपालन और पशु आहार प्रबंधन में प्रतिदिन **3–6 घंटे** श्रम निवेश करती हैं, जो पशु स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादकता और गुणवत्ता सुधार में प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है। महिलाओं की केंद्रीय भूमिका के कारण पशुपालन क्षेत्र में उच्च-मूल्य उत्पादों- जैसे दूध, दुग्ध-उत्पाद और छोटे पशुधन का उत्पादन बढ़ रहा है, जिससे कृषि GDP में संरचनात्मक बदलाव आ रहा है। इसके अतिरिक्त, पशुधन को **जीवित परिसंपत्ति** के रूप में उपयोग किया जाता है, जो फसल विफलता, जलवायु झटकों या आर्थिक संकट के समय आय और पोषण सुरक्षा प्रदान करता है। इस प्रकार, महिला-नेतृत्व वाला पशुपालन न केवल ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करता है, बल्कि भारतीय कृषि को **अधिक लाभकारी, जोखिम-सहनीय और आर्थिक रूप से टिकाऊ** बनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।

महिला-केंद्रित डेयरी सहकारिताएँ: आर्थिक सशक्तिकरण के सफल मॉडल

भारत में महिला-केंद्रित डेयरी सहकारी संस्थाएँ यह स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं कि जब महिलाओं को संगठित संरचनाओं, बाज़ार तक सीधी पहुँच और संस्थागत समर्थन मिलता है, तो पशुपालन एक शक्तिशाली आर्थिक परिवर्तन का माध्यम बन जाता है। अमूल मॉडल ने त्रि-स्तरीय सहकारी व्यवस्था के माध्यम से लाखों छोटे और महिला डेयरी उत्पादकों को बिचौलियों से मुक्त कर बाज़ार से जोड़ा, जिससे उन्हें स्थिर मूल्य और नियमित आय प्राप्त हुई। इसी मॉडल को अपनाते हुए बिहार की सुधा डेयरी ने ग्रामीण महिलाओं को दुग्ध उत्पादन, पशु स्वास्थ्य सेवाओं और तकनीकी सहायता से जोड़कर उनकी आजीविका और आर्थिक सुरक्षा को सुदृढ़ किया। हाल के वर्षों में, उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थापित **बलिनी मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी** महिला-नेतृत्व वाले डेयरी उद्यम का एक उल्लेखनीय उदाहरण है, जहाँ स्वामित्व, निर्णय-निर्माण और आय नियंत्रण सीधे महिलाओं के हाथों में है। स्वचालित दुग्ध संग्रह केंद्रों, गुणवत्ता-आधारित भुगतान और सीधे बैंक हस्तांतरण की व्यवस्था ने न केवल पारदर्शिता बढ़ाई है, बल्कि महिलाओं की उत्पादकता और घरेलू आय में भी उल्लेखनीय **वृद्धि** की है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि महिला-केंद्रित सहकारी और उत्पादक कंपनियाँ पशुपालन को केवल आजीविका गतिविधि नहीं, बल्कि **ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मूल्य वृद्धि, आय स्थिरता और समावेशी विकास** का प्रभावी साधन बना सकती हैं।

महिलाओं और संपत्ति: श्रम के बावजूद सीमित अधिकार

हालाँकि महिलाएँ पशुपालन और डेयरी क्षेत्रों में अधिकांश श्रम और प्रबंधन का बोझ उठाती हैं, फिर भी संपत्ति और संसाधनों पर उनका नियंत्रण अत्यंत सीमित है। ग्रामीण भारत में, पशुपालन और कृषि से जुड़ी आय के बावजूद, अधिकांश महिलाओं के नाम पर न तो कृषि भूमि होती है और न ही स्थायी आवास। कृषि भूमि स्वामित्व में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 13–14% है, और घर या अन्य संपत्ति भी प्रायः पुरुषों के नाम पर ही होती है। इस असमानता का अर्थ यह है कि महिलाएँ अपने मेहनत और उत्पादन के वास्तविक लाभ का पूर्ण स्वामित्व नहीं रख पातीं, जिससे उनकी आर्थिक सुरक्षा और सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है। केवल श्रम और उत्पादन में योगदान पर्याप्त नहीं है; संपत्ति और निर्णय-निर्माण में समानता सुनिश्चित करना महिला सशक्तिकरण का अनिवार्य पहलू है।

कृषि विस्तार और नीति में लैंगिक दृष्टिकोण की आवश्यकता

यदि पशुपालन क्षेत्र की वास्तविक क्षमता का दोहन करना है, तो कृषि विस्तार सेवाओं में लैंगिक-संवेदनशील दृष्टिकोण अनिवार्य है।

आवश्यक सुधार:

- महिला-केंद्रित पशुपालन प्रशिक्षण
- आर्थिक परिणाम-आधारित विस्तार मॉडल
- महिला विस्तार कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ाना
- SHGs और FPOs को विस्तार प्रणाली से जोड़ना
- महिलाओं को संपत्ति, ऋण और बाज़ार तक पहुँच

इस प्रकार, महिला-केंद्रित पशुपालन न केवल सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम है, बल्कि भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की समग्र आर्थिक क्षमता को बढ़ाने वाला एक रणनीतिक क्षेत्र भी है।

निष्कर्ष

पशुपालन क्षेत्र भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का भविष्य है, और इस भविष्य की मुख्य वाहक महिलाएँ हैं, हालाँकि महिलाएँ श्रम, समय और कौशल का अधिकांश योगदान देती हैं, फिर भी वे संसाधनों और निर्णय-निर्माण से वंचित हैं। यदि कृषि विस्तार नीतियाँ महिलाओं को केंद्र में रखकर बनाई जाएँ, तो न केवल पशुपालन क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ेगी, बल्कि ग्रामीण गरीबी, पोषण और आय असमानता जैसी समस्याओं का समाधान भी संभव होगा।

महिला-केंद्रित पशुपालन विस्तार ही समावेशी और टिकाऊ कृषि विकास की कुंजी है।